अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) आचारांग के लोक विजय नामक अध्ययन में उद्देशक है-
(क) 7 (ख) 5
(ग) 8 (घ) 8 (घ)

(b) क्रिया के आधार को कहते हैं-
(क) सम्बन्ध (ख) अपादान
(ग) अधिकरण (घ) संबोधन (ग)

(c) 'मुणीसर' शब्द में सन्धि है-
(क) असमान स्वर सन्धि (ख) लोप सन्धि
(ग) दीर्घ सन्धि (घ) अव्यय सन्धि (ग)

(d) 'इम' सर्वनाम नपुंसकलिंग तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप नहीं है-
(क) इमेणं (ख) इमिणा
(ग) इमेण (घ) इणमो (घ)

(e) पानी के लिए प्राकृत में शब्द है-
(क) सलिल (ख) वाया
(ग) सुणु (घ) जंबू (क)

(f) औदारिक मिश्र काय योग में चतुर्थ गुणस्थान में बन्ध स्वामित्व है-
(क) 74 (ख) 71
(ग) 72 (घ) 75 (घ)

(g) तेउकाय, वायुकाय में अबन्ध योग्य प्रकृतियाँ है-
(क) 105 (ख) 115
(ग) 15 (घ) 11 (ग)

(h) भवनपति वाणव्यन्तर में समुच्चय बन्ध स्वामित्व है-
(क) 103 (ख) 104
(ग) 101 (घ) 72 (क)

(i) सातवीं नारकी का जीव प्रथम गुणस्थान में नहीं बाँधता है-
(क) तिर्यंच द्विक (ख) नपुंसकवेद
(ग) उच्च गोत्र (घ) हुण्डक संस्थान (ग)

(j) पद्म लेश्या में प्रथम गुणस्थान में बन्ध स्वामित्व है-
(क) 108 (ख) 105
(ग) 101 (घ) 111 (ख)

(k) कर्मबन्ध का हेतु नहीं है-
(क) अव्रत (ख) प्रमाद
(ग) अज्ञान (घ) कषाय (ग)

(l) किसी व्यक्ति या वस्तु में द्वेष उत्पादक कर्म है-
(क) शोक (ख) जुगुप्सा
(ग) अरति (घ) भय (ग)

(m) प्रत्येक प्रकृति नहीं है-
(क)उपघात (ख) निर्माण
(ग) पराघात (घ) सुभग (घ)

(n) 20 कोटाकोटी सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) अन्तराय कर्म की (ख) वेदनीय कर्म की

(ग) नाम कर्म की (घ) मोहनीय कर्म की (ग)

(o) जिन भगवान में परीषह संभव है-

(क) 11 (ख) 07

(ग) 09 (घ) 10 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) चौथी 'विमुक्ति' नामक चूलिका में वीतराग स्वरूप का उपमाओं के साथ वर्णन है। (हाँ)

(b) स्व-अस्तित्व के प्रति जागरुक होना ही अर्हत् की आज्ञा में रहना है। (हाँ)

(c) दुःख का मूल कारण कषाय है। (हाँ)

(d) आचारांग में कर्त्तव्य पालन का स्वरूप देख सकते हैं, अतः यह आश्वास है। (नहीं)

(e) सभी जीवों के आत्म-प्रदेश एक समान असंख्यात ही होते हैं। (हाँ)

(f) किसी भी तिर्यंच के तीर्थंकर नाम का बंध नहीं होता है। (हाँ)

(g) वैक्रिय मिश्र काययोग में मात्र मनुष्यायु का ही बंध सम्भव है। (नहीं)

(h) सूक्ष्म एकेन्द्रिय में कापोत लेश्या नहीं होती है। (नहीं)

(i) अपर्याप्त नाम कर्म वाले जीवों के मनुष्य प्रायोग्य बंध नहीं होता है। (नहीं)

(j) आत्म-विस्मरण को ध्यान कहते हैं। (नहीं)

(k) जीव के विचार, दृष्टिकोण अथवा विवेक को प्रभावित करने वाला कर्म अन्तराय है। (नहीं)

(l) कर्मयुक्त जीव उर्ध्व दिशा में ही गमन करता है। (नहीं)

(m) ज्ञानावरणीय कर्म के निमित्त से प्रज्ञा और अज्ञान परीषह होते हैं। (हाँ)

(n) समझे हुए अथवा जाने हुए तत्त्व का चिन्तन, मनन करना अनुप्रेक्षा है। (हाँ)

(o) आत्मा के कलुषित परिणामों को कषाय कहा जाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अहिंसा और संयम का प्रशस्त मार्ग	(क) प्रतिघेतत्वा	महापथ
(b)	उपशमादि उत्तम भावों की प्राप्ति	(ख) हंतत्वा	भावक्षण
(c)	मिथ्यात्व,अज्ञान रूप महानिद्रा से व्यामोहित	(ग) आयतयोग	भाव सुप्त
(d)	गुलाम बनाकर अपने कब्जे में रखना	(घ) कूटाकारशाला	प्रतिघेतत्वा
(e)	प्राणों से रहित करना, मार डालना	(च) महापथ	उद्दवेयव्वा
(f)	चाबुक आदि से मारना	(छ) हिंसा	हंतत्वा
(g)	मन-वचन-काय की संयत योग क्रिया	(ज) सम्यक्त्व	आयतयोग
(h)	शाश्वत सत्य धर्म में विश्वास	(झ) भावक्षण	सम्यक्त्व
(i)	विराट् प्रकृति के विपरीत	(य) उद्दवेयव्वा	हिंसा
(j)	पर्वत के शिखर जैसी आकृति वाला भवन	(र) भाव सुप्त	कूटाकारशाला

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं वास्तविक स्व-अस्तित्व का विस्मरण हूँ। मूर्च्छा

(b) मैं वासना, विकार रूप कामेच्छा हूँ। मदनकाम

(c) सांख्य दर्शन में भी मेरे लिए पुरुष शब्द का प्रयोग हुआ है। आत्मा

(d) मैं संयम का सार हूँ। मोक्ष

(e) पूर्वजों की मिथ्या मान्यता को नहीं छोड़ने पर मेरी तरह पश्चात्ताप करना पड़ेगा। लोहवणिक्

(f) मैंने केशी श्रमण के श्रीमुख से केवली प्ररुपित धर्म का श्रवण किया। राजा प्रदेशी

(g) मेरा बंध संयम सापेक्ष है। आहारक द्विक

(h) मनुष्य प्रायोग्य तथा उच्च गोत्र का बंध हम नहीं करते हैं। तेऊकाय, वायुकाय

(i) हम चौथे गुणस्थान में रहते यदि आयुष्य बंध करे तो वैमानिक

	देवायु का ही करते हैं।	मनुष्य, तिर्यंच
(j)	मैं एक ऐसी गति हूँ, जिसके बंध योग्य अध्यवसाय आठवें गुणस्थान तक होते हैं।	देवगति
(k)	मैं एक ऐसी समकित हूँ, जिसमें आहारक द्विक का बंध हो सकता है, पर उदय नहीं हो सकता।	उपशम समकित
(l)	मेरा निर्वाण होता है, उपपात नहीं।	स्नातक
(m)	उत्तम संहनन वाला व्यक्ति ही मेरा अधिकारी है।	ध्यान
(n)	मैं पात्र को ज्ञानादि सद्गुण प्रदान करता हूँ।	त्याग
(o)	मैं दर्शन या वाणी से दूसरे को पराजित कर देने वाला कर्म हूँ।	पराघात

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) 'णत्थि कालस्स णागमो।' सूत्र का अर्थ लिखिए।

काल अर्थात् मृत्यु का आगमन नहीं है, ऐसा नहीं है अर्थात् मृत्यु का आना नियत है, कोई भी इससे बच नहीं सकता।

(b) अग्र और मूल का अर्थ लिखिए।

अग्र का अर्थ-वेदनीयादि चार अघाती कर्म अथवा 7 कर्म या अव्रत, प्रमादादि।

मूल का अर्थ- मोहनीयादि चार घाति कर्म अथवा मोहनीय कर्म या मिथ्यात्व।

(c) नरक से मनुष्य लोक में नहीं आने का कोई एक कारण लिखिए।

नोटः-इनमें से कोई एक मान्य

1. नरक गति में अत्यन्त तीव्र वेदना का वेदन करने से।
2. परमाधार्मिक नरकपालों द्वारा बार-बार ताड़ित-प्रताड़ित किये जाने से।
3. नरक गति सम्बन्धी असाता वेदनीय कर्म के क्षय नहीं होने से।
4. नरक गति सम्बन्धी आयुकर्म के क्षय नहीं होने से।

(d) 'ता' सर्वनाम स्त्रीलिंग षष्ठी विभक्ति के एकवचन, बहुवचन के दो-दो रूप लिखिए।

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
षष्ठी	ताअ/ताइ/ताए (उसका, उसकी, उसके)	तास/ताण/ताणं (उसका, उसकी, उसके)

(e) चमू+उदय, दया+ऊण, तणू+अकय, सामि+इभ, इनकी संधि कीजिए।

चमू+उदय - चमूदय (सेना की उन्नति)

दया+ऊण - दयोण (दया से हीन)

तणू+ अकय - तणुअकय (शरीर से नहीं किया हुआ)

सामि+इभ - सामीभ (स्वामी का हाथी)

(f) अव्यय किसे कहते हैं ?

ऐसे शब्द जिसके रूप में कोई परिवर्तन न हो और जो सदा एक से रहे अर्थात् सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहे, वे अव्यव कहलाते हैं।

(g) भाषा समिति किसे कहते हैं?

सत्य, हितकारी, परिमित एवं संदेह रहित भाषा बोलना 'भाषा समिति' है।

(h) आम्नाय किसे कहते हैं ?

सीखे हुए ज्ञान का पुनरावर्तन करना, बार-बार दोहराना 'आम्नाय' है।

(i) सिद्धावस्था में कौनसे पारिणामिक भाव रहते हैं ?

सिद्धावस्था में जीवत्व एवं अस्तित्व आदि पारिणामिक भाव विद्यमान रहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) उपदेष्टा के लक्षणों को लिखिए।

उपदेष्टा वस्तुतः कष्टसहिष्णु, वेदवित् अर्थात् आगमज्ञान में निष्णात, सर्वभूतानुकम्पी, सकल चराचर जीवनिकाय का शरण्यभूत हो। उसका उपदेश समष्टि के लिए और समष्टि का हितसाधक तथा शान्ति, क्षमा, अहिंसा, विरति, कषायों के उपशमन, निर्वाण, निर्दोष व्रताचरण, सरलता, मृदुता एवं लाघव आदि विषयों पर आगमानुसार होना चाहिए।

(b) सत्य के तीन अर्थ लिखिए।

1. प्राणियों के लिए जो हितकर है, वह सत्य है-संयम।
2. जिनेश्वर द्वारा उपदिष्ट आगम भी सत्य है।
3. वीतराग द्वारा प्ररूपित विभिन्न प्रवचन रूप आदेश भी सत्य है।

(c) 'पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि' सूत्र का विवेचन लिखिए।

हे पुरुष! तू ही मेरा मित्र है, फिर बाहर अपने से भिन्न मित्र क्यों ढूँढ रहा है?

(d) छद्मस्थ जीव किन दस वस्तुओं को नहीं देख पाते हैं ?

1. धर्मास्तिकाय 2. अधर्मास्तिकाय 3. आकाशास्तिकाय 4. अशरीरी जीव
5. परमाणु पुद्गल 6. शब्द 7. गन्ध 8. वायु
9. यह जिन (घातीकर्म क्षय करने वाला) होगा या नहीं
10. यह समस्त दुःखों का अन्त करेगा अथवा नहीं।

(e) कार्मण काय योग में समुच्चय बंध योग्य प्रकृतियों में कौनसी प्रकृतियाँ नहीं होती है?

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	प्रकृतियाँ
समुच्चय बंध	112	(6-11,49,50)	आहार से नरय तक, तिरि नराउ (8) को छोड़कर।

(f) बेइन्द्रिय जाति में बंध-स्वामित्व लिखिए।

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	प्रकृतियाँ
समुच्चय व 1	109	(1-11)	जिण से नरय (11) छोड़कर
2	96	(12-24)	सुहुम से छेवट्ट तक (13)

(दूसरी मान्यता के अनुसार दूसरे गुणस्थान में आयुष्य का बंध नहीं होता। अतः तिर्यंचायु, मनुष्यायु को छोड़कर 94 प्रकृति का बंध होता है। यह मत अधिक महत्त्वपूर्ण है।

(g) 'वेदनीये शेषाः।' सूत्र की व्याख्या लिखिए।

बाईस में से शेष परीषह वेदनीय के निमित्त से होते हैं। अर्थात् क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दंशमशक शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श, मल और चर्या, ये 11 परीषह वेदनीय के निमित्त से होते हैं।

(h) ''पूर्व प्रयोगादसंगत्वाद् बंध-छेदात्तथा-गति-परिणामाच्चतद्गतिः।'' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पूर्व प्रयोग, संग के अभाव, बन्धन के टूटने और वैसी गति के परिणाम से, मुक्त जीव उर्ध्वगमन करता है।

(i) शुभ एवं सुभग में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

जिस कर्म के उदय से नाभि के ऊपर के अवयव श्रेष्ठ हो उसे शुभनामकर्म तथा जिस कर्म के उदय से बिना किसी उपकार के जो सबको प्रिय लगे वह सुभग नामकर्म है।